

अष्टमः पाठः

# सूक्तय:

अयं पाठः मूलतः तमिलभाषायाः "तिरुक्कुरल्" नामकग्रन्थात् गृहीतः अस्ति। अयं ग्रन्थः तमिलभाषायाः वेदः इति कथ्यते। अस्य प्रणेता तिरुवल्लुवरः वर्तते। प्रथमशताब्दी अस्य कालः

स्वीकृत: अस्ति। धर्मार्थ-कामप्रतिपादकोऽयं ग्रन्थ: त्रिषु भागेषु विभक्तोऽस्ति। तिरुशब्द: श्रीवाचक: अस्ति, अत: तिरुक्कुरलशब्दस्य अभिप्रायो भवति – श्रिया युक्ता वाणी। अस्मिन् ग्रन्थे मानवानां कृते जीवनोपयोगि सत्यं सरसबोध-गम्यपद्यै: प्रतिपादितम् अस्ति।

पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता।।1।।
अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहुः महात्मानः समत्विमिति तथ्यतः।।2।।
त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
पित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः।।3।।
विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मनः प्रकीर्तिताः।
अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते।।4।।
यत् प्रोक्तं येन केनापि तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः।
कर्तु शक्यो भवेद्येन स विवेक इतीरितः।।5।।
वाक्यदुधैर्यवान् मन्त्री सभायामप्यकातरः।
स केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते।।6।।

68 शेमुषी- द्वितीयो भागः

य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च। न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च॥७॥

आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः। तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः॥॥

### शब्दार्थाः

- उसने तपस्या की तेपे तपस्याम् अकरोत् - Performed penance न वक्रता/ऋजुता Simplicity अवक्रता – सरलता - वाणी में वाचि In the वाण्याम् speech यथार्थरूपेण वास्तव में - Actually तथ्यतः कठोराम् कठोर - Harsh परुषाम् अभ्युदीरयेत् -बोलना चाहिए वदेत् - He/she may say अज्ञानी/नासमझ विमृढधी: मूर्ख:/बुद्धिहीन: - A fool वाचि/सम्भाषणे पट्टः - सम्भाषण/वार्तालाप में चतुर वाक्पटुः - Eloquent - नेत्रों से युक्त चक्षुष्मन्तः नेत्रवन्तः - Having eyes आनने/मुखे वदने - मुख पर - On the face ईरित: कथित: - कहा गया - Said तिरस्क्रियते/अवमान्यते - अपमानित किया जाता है परिभूयते - Gets insulted - निर्भीक वीर:/साहसी अकातरः - Fearless श्रेय: कल्याणम् - Wellness – कल्याण

सूक्तय:

**प्रभृतानि** - अत्यधिकानि - अत्यधिक - Many

विद्षाम् - विद्वद्जनानाम् - विद्वानों का - Of scholars

#### अभ्यासः

- 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-
  - (क) पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति?
  - (ख) विमृढधी: कीदुशीं वाचं परित्यजित?
  - (ग) अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्त: प्रकीर्तिता:?
  - (घ) प्राणेभ्योऽपि क: रक्षणीय:?
  - (ङ) आत्मन: श्रेय: इच्छन् नर: कीदृशं कर्म न कुर्यात्?
  - (च) वाचि का भवेत्?
- 2. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-
  - यथा- विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते। कः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
  - (क) संसारे विद्वांसः ज्ञानचक्षुर्भिः नेत्रवन्तः कथ्यन्ते।
  - (ख) जनकेन सुताय शैशवे विद्याधनं दीयते।
  - (ग) तत्त्वार्थस्य निर्णयः विवेकेन कर्तु शक्यः।
  - (घ) धैर्यवान् **लोके** परिभवं न प्राप्नोति।
  - (ङ) आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः **परेषाम्** अनिष्टं न कुर्यात्।
- 3. पाठात् चित्वा अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयम् उचितपदक्रमेण पूरयत-
  - (क) पिता ----- बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति, अस्य पिता किं तपः तेपे इत्युक्तिः -----।
  - (ख) येन ----- यत् प्रोक्तं तस्य तत्त्वार्थनिर्णय: येन कर्तु ------भवेत्, स: ----- इति -----।

|    | (刊)    | य आत्मन: श्रेय: सुखानि च इच<br>कदापि च न।                    | छति, परेभ्य: अहितं           |
|----|--------|--|------------------------------|
| 4. | अधोरि  | लेखितम् उदाहरणद्वयं पठित्वा अन्येषां प्रश्नानाम्<br>प्रश्नाः | ् उत्तराणि लिखत—<br>उत्तराणि |
|    | क.     | श्लोक संख्या - 3   |                              |
|    | यथा-   | सत्या मधुरा च वाणी का?                                       | धर्मप्रदा                    |
|    |        | (क) धर्मप्रदां वाचं क: त्यजित?                               |                              |
|    |        | (ख) मूढ: पुरुष: कां वाणीं वदति?                              |                              |
|    |        | (ग) मन्दमितः कीदृशं फलं खादित?                               |                              |
|    | ख.     | श्लोक संख्या - 7   |                              |
|    | यथा-   | बुद्धिमान् नरः किम् इच्छति?                                  | आत्मनः श्रेयः                |
|    |        | (क) कियन्ति सुखानि इच्छति?                                   | <del></del>                  |
|    |        | (ख) सः कदापि किं न कुर्यात्?                                 | <u> </u>                     |
|    |        | (ग) सः केभ्यः अहितं न कुर्यात्?                              |                              |
| 5. | मञ्जूष | ायाः तद्भावात्मकसूक्तीः विचित्य अधोलिखित                     | कथनानां समक्षं लिखत–         |
|    | (क)    | विद्याधनं महत्   |                              |
|    |        |  |                              |
|    |        |  |                              |
|    | (폡)    | आचार: प्रथमो धर्म:   |                              |
|    |        |  |                              |
|    |        | <del></del>  |                              |
|    | (ग)    | चित्ते वाचि च अवक्रता एव समत्वम्                             |                              |
|    |        |  |                              |
|    |        |  |                              |

71

सूक्तय:

आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।

मनिस एकं वचिस एकं कर्मिण एकं महात्मनाम्।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

सं वो मनांसि जानताम्।

विद्याधनं धनं श्रेष्ठं तन्मूलिमतरद्धनम्।

आचारप्रभवो धर्मः सन्तश्चाचारलक्षणाः।

| 6. | (अ)  | अधोलिखि             | नानां शब्दा | नां पुरतः | उचितं | विलोमशब्दं                     | कोष्ठव   | तत् चित्वा | लिखत- |
|----|--|---------------------|-------------|-----------|-------|--------------------------------|----------|------------|-------|
|    |  | शब्दा:              | 1           | विलोमश    | द्धाः |                                |          |            |       |
|    | (क)  | पक्व:               | -           |           | (     | परिपक्व:, अ                    | पक्व:, व | म्वथित:)   |       |
|    | (폡)  | विमूढधी:            | -           |           | (     | सुधी:, निधि:                   | , मन्दधी | :)         |       |
|    | (ग)  | कातर:               | -           |           | (     | अकरुण:, अ                      | धीर:, अ  | ाकातर:)    |       |
|    | (घ)<br>(ङ)   | कृतज्ञता<br>आलस्यम् |             |           |       | कृपणता, कृत<br>उद्विग्नता, विव |          |            |       |
|    | (च)  | परुषा               |             |           | (     | पौरुषी, कोमल                   | ला, कठो  | रा)        |       |
|    | (आ) अधोलिखितानां शब्दानां त्रयः समानार्थकाः शब्दाः मञ्जूषायाः चित्वा<br>लिख्यन्ताम्– |                     |             |           |       |                                |          |            |       |
|    | (क)  | प्रभूतम्            | -*/-        | 2         | _     |                                |          |            |       |
|    | (폡)  | श्रेय:              | <b></b>     |           | _     |                                |          |            |       |
|    | (ग)  | चित्तम्             |             |           | -     |                                |          |            |       |
|    | (ঘ)  | सभा                 |             |           | -     |                                |          |            |       |
|    | (ङ)  | चक्षुष्             |             |           | _     |                                |          |            |       |
|    | (审)  | मुखम्               |             |           | -     |                                |          |            |       |

72 शेमुषी- द्वितीयो भागः

### शब्द-मञ्जूषा

| लोचनम् | नेत्रम् | भूरि     |
|--------|---------|----------|
| शुभम्  | परिषद्  | मानसम्   |
| मन:    | सभा     | नयनम्    |
| आननम्  | चेत:    | विपुलम्  |
| संसद्  | बहु     | वक्त्रम् |
| वदनम्  | शिवम्   | कल्याणम् |

## 7. अधस्तात् समासविग्रहाः दीयन्ते तेषां समस्तपदानि पाठाधारेण दीयन्ताम् -

|     | विग्रह:                  | समस्तपदम्   | समासनाम                        |
|-----|--------------------------|-------------|--------------------------------|
| (क) | तत्त्वार्थस्य निर्णय:    |             | षष्ठी तत्पुरुष:                |
| (폡) | वाचि पटुः                | <del></del> | सप्तमी तत्पुरुष:               |
| (ग) | धर्म प्रददाति इति (ताम्) |             | उपपदतत्पुरुष:                  |
|     | न कातर:<br>न हितम्       | <del></del> | नञ् तत्पुरुषः<br>नञ् तत्पुरुषः |
| (च) | महान् आत्मा येषाम्       | <del></del> | बहुब्रीहि:                     |
| (छ) | विमूढा धी: यस्य स:       |             | बहुब्रीहि:                     |

### योग्यताविस्तारः

यहाँ संगृहीत श्लोक मूलरूप से तिमल भाषा में रिचत 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रन्थ से लिए गए हैं। तिरुक्कुरल साहित्य की उत्कृष्ट रचना है। इसे तिमल भाषा का 'वेद' माना जाता है। इसके प्रणेता तिरुवल्लुवर है। इनका काल प्रथम शताब्दी माना गया है। इसमें मानवजाति के लिए जीवनोपयोगी सत्य प्रतिपादित है। 'तिरु' शब्द 'श्रीवाचक' है। तिरुक्कुरल शब्द का अभिप्राय है-श्रिया युक्त वाणी। इसे धर्म, अर्थ, काम तीन भागों में बाँटा गया है। प्रस्तुत श्लोक सरस, सरल भाषायुक्त तथा प्रेरणाप्रद हैं।

## क. 'तिरुक्कुरल्-सूक्तिसौरभम्' इति पाठस्य तिमलमूलपाठः (देवनागरी-लिपौ)

सोर्कोट्टम् इल्लदु सेप्पुम् ओरू तलैया उळूकोट्टम इन्मै पेरिन्। मगन् तन्दैवक्काटुम उद्रवि इवन् तन्दै एन्नोटान् कौमू एननुम सोक्त। इनिय उळवाग इन्नाद कूरल् किन इरूप्पक् काय् कवरंदट्र। कण्णुडैयर् एन्पवर् कट्रोर मुहत्तिरण्डु पुण्णुडैयर कल्लादवर्। एप्पोरूल यार यार वाय् केट्रिपनुम् अप्पोरूल मेय् पोरूल काण्पदरिवु। सोललवल्लन् सोरिवलन् अन्जान् अवनै इहलवेल्लल् यारुक्कुम् अरितु। नोय एल्लाम् नोय् सेयदार मेलवान् नोय् सेययार नोय् इन्मै वेण्डुभवर्। ओषुक्कम् विषुष्पम् तरलान् ओषुक्कम् उियरिनुम् ओभ्भप्पडुम्।

#### ख. ग्रन्थपरिचयः

तिरुक्कुरल् तिमलभाषायां रचिता तिमलसाहित्यस्य उत्कृष्टा कृति: अस्ति। अस्य प्रणेता तिरुवल्लुवर: अस्ति। ग्रन्थस्य रचनाकाल: अस्ति-ईस्वीयाब्दस्य प्रथमशताब्दी।

अस्मिन् ग्रन्थे सकलमानवजाते: कृते जीवनोपयोगिसत्यम् प्रतिपादितम्।

तिरु शब्द: 'श्री' वाचक:। 'तिरुक्कुरल्' पदस्य अभिप्राय: अस्ति श्रिया युक्तं कुरल् छन्द: अथवा श्रिया युक्ता वाणी। अस्मिन् ग्रन्थे धर्म-अर्थ-काम-संज्ञका: त्रय: भागा: सन्ति। त्रयाणां भागानां पद्यसंख्या 1330 अस्ति।

### ग्, भाव-विस्तारः

#### सदाचार:

किं कुलेन विशालेन शीलमेवात्र कारणम्। कृमय: किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु।। आगमानां हि सर्वेषामाचार: श्रेष्ठ उच्यते। आचारप्रभवो धर्मो धर्मादायुर्विवर्धते।। मधुरा वाक्

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्व तुष्यन्ति जन्तवः। तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।। वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया।

लक्ष्मी: दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम्।। स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

### विद्याधनम्

विद्याधनम् धनं श्रेष्ठं तन्मूलिमतरद्धनम्। दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते। माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।। विद्वांसः

नास्ति यस्य स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्। लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति। विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन। स्वदेशे पज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पज्यते।

